www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ 1000
वार्षिक शुल्क ₹ 100
एक प्रति ₹ 2.00

● वर्ष . ११७ ● अंक . ४०–४१ ● ०३ व १० दिसम्बर, २०१३ मंगलवार मार्गशीष शु० प्रतिपदा व अष्टमी, सम्वत् २०७० ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११४

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मारीशस 2013 सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मारीशस २०१३ दिनांक ५ से ८ दिसम्बर, २०१३ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. दिनांक २८ नवम्बर, १३ को मारीशस पहुंचे। उनका एयरपोर्ट पर आर्य सभा मारीशस के अधिकारियों ने भव्य स्वागत किया। महासम्मेलन में भारत की ओर से डॉ. राम प्रकाश राज्य सभा सांसद श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. श्री विनय आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, वाचोनिधि शास्त्री गांधी धाम, स्वामी धर्मदेव, ब्रह्मचारी विश्वपाल, जयन्त, अखिलेश आचार्य, जितेन्द्र चिकारा, आचार्य सनत् कुमार, डॉ. ओ. पी. अग्रवाल बरेली, श्री राजवीर शास्त्री आदि ने प्रतिनिधित्व किया। सम्मेलन स्थल पर पहुंचने पर पुनः आर्य सभा के पदाधिकारियों ने प्रधान जी का भव्य स्वागत किया।

दिनांक ५.१२.१३ को अपराह्न ३ बजे से सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता डा. राम प्रकाश सांसद राज्य सभा ने की। सम्मेलन ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। फिर डॉ. उषा शर्मा उषस् के आचार्यत्व में बृहद यज्ञ हुआ।

समारोह का उद्घाटन मारीशस के महामहिम राष्ट्रपति राजकेश्वर परयाग ने किया और जनता के नाम संदेश दिया। इस अवसर पर स्मारिका का लोकार्पण भी हुआ। कार्य संचालन सभा मंत्री श्री हरिदेव रामधनी ने किया। दि. ६.१२.१३ के प्रथम सत्र का 'भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्य समाज के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार में योग' कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. राम प्रकाश जी सांसद थे तथा अध्यक्षता प्रो. सुदर्शन जगेश्वर वाइस चांसलर आफ मारीशस युनिवर्सिटी ने की। द्वितीय सत्र में 'भारतीय धर्मोपदेशकों के द्वारा सामाजिक सुधार कार्य' पर वक्ताओं ने चिन्तन दिया। इस सत्र की अध्यक्षता श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने की। दि. ७.१२.१३ को प्रातः प्रथम सत्र आर्य महिला सम्मेलन आयोजित हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती धनवती रामचर्ण ने की। मुख्य अतिथि डॉ. उषा शर्मा उषस तथा विशिष्ट अतिथि माननीया श्रीमती शैलाबाई बापू GOSK प्रो. श्रीमती रेशमी रामधनी MGI थी। कार्य संचालन श्रीमती रामफल ने किया। द्वितीय सत्र युवा आर्य महासम्मेलन के रूप में प्रारम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती पूनम सुमन तिलकधारी ने की। मुख्य अतिथि माननीय वसन्त कुमार बनवारी शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री मारीशस तथा विशिष्ट अतिथि मान. सुरेन्द्र दयाल सामाजिक एकीकरण एवं आर्थिक सशक्तीकरण मंत्री रहें कार्य संचालन श्री धरमदेव गंगू मंत्री आर्य युवक संघ ने की। दि. ८.१२.१३ को महा सम्मेलन का समापन हुआ। जिसमें विशाल रैली आयोजित की गयी। यज्ञ की पूर्णाहुति हुयी श्री बालचन्द ठाकुर P.M.S.M. आर्य भूषण आर्य सभा मारिशस के प्रधान, श्री विनय आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा देहली (भारत) आचार्य आशीष स्वामी ने जन समूह को मार्ग दर्शन दिया। डॉ. उदय नाराण उप प्रधान आर्य सभा माननीय बसन्त कुमार बनवारी शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री प्रो. राम प्रकाश जी सांसद भारत उप प्रधान मंत्री मारीशस सरकार माननीय अनिल बेचू ने अपने उद्बोधन में राष्ट्रोत्थान के लिए वैदिक जीवन जीने का मार्ग दर्शन दिया। कार्य संचालन सभा मंत्री श्री हरिदेव रामधनी एवं धन्यवाद प्रकाश डॉ. रुद्रसेन नीऊर प्रधान आर्य सभा मारीशस ने किया। शान्ति पाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में पण्डिता सत्यम् चमन श्री सत्य देव प्रीतम उप प्रधान श्री आनन्द चमन का सहयोग अत्यन्त प्रशंसनीय रहा।

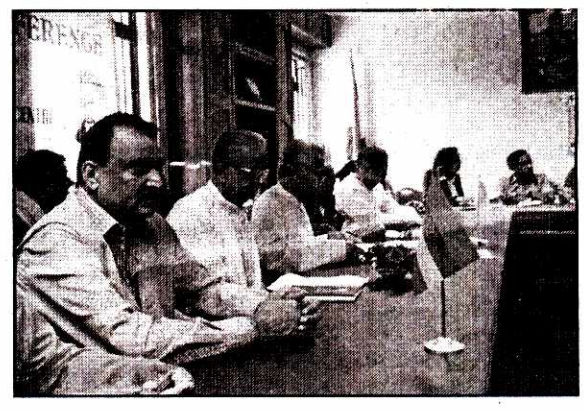

वेदामृतम्

ओ३म् दिवो विष्ण उतवा पृथिव्याः, महोविष्ण उरोरन्तरिक्षात्
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः आप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्।
अथर्व–७–२६–८

अर्थ–(विष्णो) हे सर्वव्यापक परमात्मन् (दिव) द्युलोक से (उतवा) और (पृथिव्याः) पृथिवी लोक से (विष्णो) हे विश्वान्तर्यामिन् यज्ञ के देव (महः) महनीय (उरोः)विस्तीर्ण (अन्तरिक्षात्) अन्तरिक्ष लोक से (बहुभिः) बहुत से (वसव्यै) ऐश्वर्य समूहों से (हस्तौ) दोनों हाथों को (पृणस्व) भर ले (दक्षिणात्) दाहिने हाथ से (आप्रयच्छ) दान दे (उत) और (सव्यात्) बायें हाथ से भी (प्रयच्छ) दान दें।

भावार्थ–दे सर्व व्यापक प्रभो ! हे विश्व ब्रह्मणु के स्वामिन् तुम अपूर्व धनाधीश हो, विश्व के द्युलोक अन्तरिक्ष लोक और पृथिवी लोक में जो धन बिखरा पड़ा है वह सब तुम्हारा ही है। तुम धन कुबेर हो और हम अकिंचन हैं अतः तुम अपने कोष से दोनों हाथों से भर भर कर हमें दान दो। हे जगत्पिता तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो।

'डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मारीशस के राष्ट्रपति को ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट करते हुए

मारीशस के महामहिम राष्ट्रपति जी ने भारत से गये अतिथियों को राष्ट्रपति भवन में भोज के लिये सादर आमंत्रित किया। भारतीय प्रतिनिधियों ने वहां जाकर महामहिम राष्ट्रपति महोदय को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट किया। प्रतिनिधियों में डॉ. राम प्रकाश सांसद, देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., विनय आर्य मंत्री दिल्ली सभा वाचोनिधि आर्य गांधी धाम आदि प्रमुख हैं।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

चार विधान सभा चुनाव के परिणाम मतदाता की नवचेतना के परिचायक

८ सितम्बर, १३ को हाल में हुये देश के चार राज्यों–राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व दिल्ली के चुनाव परिणाम घोषित हुये जिनमें तीन राज्यों में पूर्ण बहुमत से भारतीय जनता पार्टी ने जीत पायी। दिल्ली में भी भारतीय जनता पार्टी ने सर्वाधिक सीटें प्राप्त की। परन्तु दिल्ली में नव निर्मित आम पार्टी ने २८ सीटें जीत कर जनता की जागरूकता का परिचय कराया। जनता अब सजग व सचेत हो रही है झूठे वायदे अल्पसंख्यको को सुविधाओं के लालीपाप को झुठला दिया।

सभी राज्यों में भारतीय जनता पार्टी को जन सामान्य ने स्वीकार करके कांग्रेस व सपा समेत सभी पार्टियों के अपने को धर्म निरपेक्ष व भारतीय जनता पार्टी को साम्प्रदायिक कहकर उसे अछूत मानने से इन्कार कर दिया है। अनेक बार इसी कालम में मैने राजनेताओं से भारतीय जनता पार्टी को साम्प्रदायिक कहने व उनकी स्वयं की पार्टी को धर्म निरपेक्ष कहने पर सवाल उठायें हैं यह स्पष्ट लिखा है कि अल्प संख्यकों व बहुसंख्यक की दीवार खड़ी करके राजनीतिक दल देश के प्रति अपराध कर रहे हैं। हमारे देश के सभी निवासी भारतीय हैं सभी को समान रूप में जीवन जीने का अधिकार है। सरकार का दायित्व बनता है कि वह सभी के प्रति समत्व का भाव रखकर उन्हें समुन्नत और सुखी बनाने के उपाय करें। परन्तु अधिकांश दलों ने वोट बैंक की राजनीति में अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक का विभेद फैलाने का यत्न किया। अल्प संख्यकों को झूठे लालीपाप बांटे उनका वोट अपनी ओर घसीटने के लिए। परन्तु इन चार राज्यों के निर्वाचन परिणामों ने अल्प संख्यक व बहुसंख्यक तथा कथित साम्प्रदायिक व धर्म निरपेक्ष वाद को पूरी तरह से नकार कर अब अपनी सजगता का परिचय दिया है।

हमारा देश इस समय मंहगाई भ्रष्टाचार नारी शोषण से जल रहा है। परन्तु कांग्रेस सरकार केवल बयान बाजी करके एक दूसरे को इसके लिए दोषी बखानने में लगी रही और अपने को सही कहती रही।

उन समस्याओं के निदान का कोई उपाय नहीं किया। जन सामान्य ने जागरूक होकर सत्य और असत्य की समीक्षा करके कांग्रेस को सभी राज्यों में सत्ता से बेदखल कर दिया।

कांग्रेस सबसे पुरानी पार्टी है और ५० साल से ज्यादा देश पर सत्ता की कुर्सी पर रही परन्तु उसकी दिशा अब सत्ता बनाये रखने के उपायों पर ही घूम गयी। भारतीय जनता पार्टी को साम्प्रदायिक कहकर जनता को मुगालते में रखती रही, जनता ने इसको नजरन्दाज किया और उसे नकार दिया। अब कांग्रेसी नेताओं को हार की शान्त चित्त से समीक्षा करनी चाहिए और अपने दोषों को दूर करनें का संकल्प लेना चाहिए।

भारतीय जनता पार्टी भी अपनी इस विजय पर हर्षित होकर उन्मादग्रस्त न हो। विगत उसकी पार्टी की अन्तर कलह ने उसे काफी हानि पहुंचायी है दिल्ली में पूर्ण बहुमत न पाने में दिल्ली के भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की अन्तर्कलह ही दोषी हैं। अस्तु भारतीय जनता पार्टी सावधान होकर विगत के दोषों की निश्चल मन से समीक्षा करके अपने को उससे दोष मुक्त बनायें। जिन प्रदेशों में उसकी सरकारें बने वहां वर्ग भेद की खाई को कतई न उभरने दें। सभी प्रदेशवासियों के हित रक्षण के लिए निष्पक्ष कर्तव्य का पालन करके प्रशासन स्थापित करें और आगामी लोक सभा निर्वाचन जो वर्ष २०१४ में सम्भावित है उसके लिए देश संरक्षण, देश अभ्युन्नत बनाने की सुयोजनाओं का निर्धारण करे दूसरे दलों पर किसी प्रकार का दोषारोपण करने में समय का व्यर्थयापन न करें और केन्द्र में अपनी सरकार बनाने का सुयोग जन जन के अन्दर अपनी सत्य योजनाओं के प्रसारण के द्वारा उनका जनमत प्राप्त करने का यत्न करें।

दिल्ली में नव निर्मित आम पार्टी के नेता भी अल्प समय में अपने लिए काफी सीटें अर्जित करने के अहंकार में न फंसे, अपने जन जन हित के निर्णय के उद्देश्य को अपने कार्यकलापों में प्रगट करें। सभी राजनीतिक पार्टियां अपनी अपनी समीक्षा करके झूठी योजनाओं के बखान और एक दूसरे पर दोषारोपण से बचें। वोट के लालच में अल्प संख्यकों को लुभावने सपने दिखाना बन्द करके जन जन में भारतीय बनकर देशहित जीने व मरने की भावना भरने का अपना उद्देश्य बनायें। यदि सभी दलों ने सही ढंग से आत्म निरीक्षण करके देश हित ही के लिए अपनी वाणी का प्रयोग किया और योजनायें प्रस्तुत करने का संकल्प लिया तो देश सभी प्रकार के अपराधों से मुक्त होकर सुखी समृद्ध राष्ट्र बनने का विश्व में अपना गौरव प्राप्त करेगा।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है सभी राजनीतिक दल इन चार राज्यों के निर्वाचन परिणामों से अपने अपने दोषों को दूर करने का संकल्प लेंगे और देश को सशक्त समृद्ध बनाने में समान रूप से योगदायी बनेंगे।

–सम्पादक

सूचना

प्रदेश की सभी पंजीकृत आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि आपको सभा से वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं। सभी आर्य समाजें एवं जिला सभायें अपना वार्षिक विवरण एवं आय व्यय विवरण भरकर दशांश सहित दिनांक १५ जनवरी, २०१३ तक सभा कार्यालय में जमाकर रसीद प्राप्त करें। –सभा मंत्री

वृहद विमान शास्त्र

वैदिक विज्ञान के विद्युत उत्पादक यन्त्र

Electricity Producing Instruments in Vedic Science

किसी प्राचीन किले के खण्डहरों को देखकर ही उसकी भव्यता का आभास हो जाता है। सन् १९१८ में पूज्य स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक को राजकीय संस्कृत पुस्तकालय बड़ौदा से महर्षि भरद्वाज द्वारा सूत्र रूप में रचित "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थ के वैमानिक प्रकरण के कुछ पन्नों की **Transcript Copy** मिली जिसको स्वामी जी ने 'बृहद् विमानशास्त्र' का नाम दिया। इस पुस्तक का श्लोकबद्ध भाष्य यति बोधानन्द ने किया था। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद स्वामी जी ने १६–०६–१९५८ ई० को पूर्ण किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने इस पुस्तक को फरवरी १९५९ ई० को प्रकाशित किया।

वृहद विमान शास्त्र के पेज २६२ पर विद्युत उत्पादक यन्त्रों का वर्णन है।

महर्षि अगस्त्य ने अपने शक्ति तन्त्र नामक ग्रंथ में ५ प्रकार के विद्युत यन्त्रों का वर्णन किया है। वे हैं–
(१) संघर्षण (२) पाकजन्य (३) जलपात (४) संयोजक (५) किरण जन्य

(१) संघर्षण यन्त्र – वे विद्युत उत्पादक यन्त्र है जो घर्षण से विद्युत उत्पन्न करते है। जैसे सूखे बालों में कंघा करने से कंघा आवेशित हो जाता है। रेशमी वस्त्र पर काँच की छड़ रगड़ने से विद्युत आवेश उत्पन्न होता है। कभी–कभी जब ऊनी वस्त्र निकालते है तो चट चट की आवाज करते है क्योंकि शरीर या अन्य कपड़ों की रगड़ से वे आवेशित हो जाते है। वैदिक विज्ञान में इस प्रकार के यन्त्र रहे होंगे जो घर्षण से विद्युत उत्पन्न करते है।

(२) पाकजन्य यन्त्र – दो या दो से अधिक पदार्थों की रासायनिक क्रिया से जो विद्युत शक्ति उत्पन्न होती है उसे पाकजन्य कहते है। इस प्रकार की विद्युत उत्पन्न करने वाले यन्त्र को पाकजन्य यन्त्र कहते है। हमारा शरीर एक पाकजन्य यन्त्र है। हम जो भोजन करते है उसमें निहित अनेक प्रकार के पोषक तत्वों की रासायनिक क्रिया से विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती है जिससे हम कार्य करते है। आधुनिक विज्ञान की **Chemical Energy** एक पाकजन्य विद्युत है। अनेक प्रकार की **Electric Batteries** से जो ऊर्जा मिलती है वह पाकजन्य विद्युत है तथा **Battery** पाकजन्य विद्युत यन्त्र है।

(३) जलपात यन्त्र – जब वाष्पीकरण के द्वारा पानी वाष्प में बदलता है तो कुछ **Ionization** हो जाता है। **Hydrogan** तथा **Oxigen** के परमाणु आवेशित हो जाते है। अथवा बादलों पर सूर्य किरण के प्रभाव से भी बादल आवेशित होते है जो वर्षा काल में तंडित के रूप को प्रकट करते है। जलपात यन्त्र जल से विद्युत बनाने वाला यन्त्र है। परन्तु इसके अन्दर **Hydro Electricity** का समावेश नहीं है क्योंकि उसमें **Following water momentum** से **Generator** चलाये जाते है वहां विद्युत **Generator** से उत्पन्न होती है पानी से नहीं।

(४) संयोजक यन्त्र – संयोजक यन्त्र सम्पर्क से विद्युत उत्पन्न करता है। जब चुम्बकीय क्षेत्र में ताम्बे के तार गतिशील होते है अथवा चुम्बक तारों की कुण्डलियों में गतिशील होता है तो विद्युत उत्पन्न होती है। आधुनिक विज्ञान का **Electric Genrator** एक सांयोजक यन्त्र है।

(५) किरणजन्य यन्त्र – वे यन्त्र जो सूर्य की किरणों से विद्युत उत्पन्न करते है उन्हें किरणजन्य यन्त्र कहते है। आधुनिक विज्ञान को जो **Solar Energy** प्राप्त करते वाले **Equipment** है उन्हें वैदिक विज्ञान की भाषा में किरण जन्य यन्त्र कहा जाता है।

महर्षि अगस्त्य ने संयोजक यन्त्र **(Electric Generator)** को सुन्दर विमान के लिए उपयुक्त यन्त्र बताया है।

उपर्युक्त तथ्यों को प्रकट करने वाले बृहद विमान शास्त्र के ये तीन श्लोक है–

(१) संघर्ष पाकजन्य जलपात तथैव हि।
सांयोजक किरणजन्यं इत्यादिनि शास्त्रतः।।६४।।

(२) द्वातिंशत इति प्रोक्तानि विद्युत यन्त्राणि यथाक्रमम्।
एतेषु व्योमयानोपयुक्त सांयोजक भवेत्।।६५।।

(३) एतेन एव प्रकर्तव्यं विद्युत यन्त्रः यथाविधि।
शक्ति तन्त्रो यथा प्रोक्तं अगस्त्येन महर्षिणा।।६६।।

महर्षि अगस्त्य द्वारा रचित शक्तितन्त्र नामक ग्रन्थ अब उपलब्ध नहीं है।

Shakti Tantra was a very famous book on Electricity in Vedic Science. It was written by Mahrishi Agastya.

–कृपाल सिंह वर्मा
२५३, शिवलोक कंकर खेड़ा, मेरठ

www.thearyasamaj.org

संस्थापित-1885 ओ३म् फोन नं0-0522-2286328
श्रीमद्दयानन्दाब्द-188 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

का
वार्षिक बृहद् अधिवेशन
दिनांक-23 एवं 24 जनवरी,2014 तद्नुसार बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
(तिथि-माघ कृष्ण पक्ष सप्तमी एवं अष्टमी) सम्वत्-2070
अधिवेशन स्थल- सभा भवन प्रांगण- 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आर्य बन्धुओं/बहिनों,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का द्वि-दिवसीय वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 23 एवं 24 जनवरी,2014 तद्नुसार बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को सभा प्रांगण में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला उप सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला उप सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेज दिये गये हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त श्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि 15 जनवरी,2014 तक जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में माननीय सभा प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः-

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू0 5/- प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।
(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः- दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश।
(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25/-
(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू0 2/- वार्षिक
(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25/- इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।
(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 100/- अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 1000/- के हिंसाब से।
(ज) जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाएं रू0 100/- दशांश एक मुश्त तथा रू0 100/- आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25/- भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।
(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। बैंक ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने की व्यवस्था है साथ ही भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ लाएं।

इस अधिवेशन में उच्च कोटि के सन्यासी/महात्मा, विद्वान/विदुषियों महोपदेशकों/ भजनोपदेशकों के अलावा विशिष्ट राजनेतागण भी पधारेंगे।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यक्रम निम्न प्रकार हैः-

दिनांक 23-01-2014 दिन बृहस्पतिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल	8.00 बजे	-	राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल	10.00 बजे	-	ध्वजारोहण- माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल	11.00 बजे	-	प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।

1:00 बजे से भोजनावकाश

द्वितीय सत्र

अपराह्न	2.00 बजे से	-	साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।
,,		-	माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
,,		-	वार्षिक वृत्तांत एवं आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत।
,,		-	अनुमानित आय-व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
अपराह्न	3.00 बजे से	-	आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल	6.00 बजे	-	सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल	7.00 से 9.00	-	सामाजिक कुरीतियों,भ्रष्टाचार निवारण सम्मेलन(मद्यनिषेध/नशाबंदी/दहेज उन्मूलन आदि विषयों पर)
रात्रि	9.00 बजे	-	शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिन दिनांक 24-01-2014 (शुक्रवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल 8.00 से 9.00 बजे तक	-	राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
प्रातःकाल 10.00 बजे से	-	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
दोपहर 1.00 बजे	-	भोजन अवकाश

चतुर्थ सत्र

अपराह्न 2.00 बजे से	-	आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन।
सायं 4.00 बजे	-	धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
मन्त्री

(देवेन्द्रपाल वर्मा)
प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

www.thearyasamaj.org

अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव

"अर्जुनदेव चढ्ढ़ा"

आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में कभी–कभी ऐसी घटनाएं हो जाती है जो कि व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि वह किस युग में जी रहा है। यह घटना राजस्थान के कोटा शहर की है जहां २०१२ में भीलवाड़ा से ईलाज के लिए कोटा लाते समय एक महिला का कोटा में निधन हो गया। निधन के एक वर्ष पश्चात पूरा परिवार परिजनों के साथ बस भर कर कोटा आया और महिला की कोटा में जिस स्थान पर मृत्यु हुई वहां कुछ टोने–टोटके करने लगे। लोगों ने पूछा तो उन्होंने बताया कि उनकी किसी पण्डित ने कहा है कि घर में जो परेशानियां चल रही हैं उसका कारण मृतका की आत्मा का भटकना है, इसलिए भटकती हुई आत्मा को साथ लेने आए हैं।

यह तो एक उदाहरण मात्र है ऐसी अनेकों घटनाएं, तथ्य विज्ञान और दर्शनशास्त्र के तर्कों से परे प्रतिदिन समाज में देखने तथा सुनने को मिलती हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव अंधविश्वासों के घोर अंधेरे में फंसा पड़ा है।

आज भी कुछ स्वार्थी पाखण्डियों द्वारा फैलाये जा रहे मिथ्या प्रचार के कारण शिक्षित होते हुए भी लकीर का फकीर बना हुआ है जबकि धार्मिक ग्रंथ किसी भी प्रकार के टोने–टोटके तथा अंधविश्वास का समर्थन नहीं करते हैं।

वशीकरण, तांत्रिक क्रियाएं, गंडे ताबीज, भूत–प्रेत की कपोल कल्पना, धातु प्लास्टिक से बने यंत्र न जाने अंधविश्वास किन–किन रूप में लोगों के मन में घर किये हुए है।

कुछ चालाक व्यक्ति मानव मन में व्याप्त इसी भय नामक कमजोरी का फायदा उठाकर कभी नारियल को मंत्र से फोड़कर दिखाना, नींबू में खून दिखाना, सफेद सरसों के दानों को काला करना, रंगीन फूलों को रंगहीन कर देना, भभूत प्रकट कर खिलाना, बिना किसी साधन के जल छिड़क कर दीपक जलाना, आत्माओं से बातें करना जैसे माध्यमों से लोगों को भयभीत कर अपना उल्लू सीधा करते नजर आते हैं।

सबसे बड़ी बात है कि यह सब होता है धर्म के नाम पर। धर्म की आड़ में फल–फूल रहे इस अंधविश्वास के धंधे में कितने ही लोग अपनी जीवन भर की कमाई डुबाते नजर आते हैं। और अंत में मिलता है उन्हें सिर्फ धोखा तथा शारीरिक, मानसिक यंत्रणा। जिन शारीरिक व मानसिक परेशानियों से बचने के लिए वे तंत्र–मंत्र के इस मार्ग को चुनते हैं, अंत में स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हुए लुटे–पिटे तथा हताश दिखाई पड़ते हैं। और कई बार स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि व्यक्ति को आत्महत्या तक करनी पड़ती है।

इन अंधविश्वासी अनुष्ठानों की मार का सामना सर्वाधिक महिलाओं को करना पड़ता है। कभी भूत–प्रेत, चुड़ैल तथा डायन न जाने कितने रूपों में उन्हें प्रताड़ित होना पड़ता है। यहां तक अनुष्ठानों की आड़ में शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता है।

सत्यता तो यह है कि इन सभी अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का कोई भी धार्मिक कारण नहीं है। वेद, उपनिषद, दर्शन धर्मशास्त्रों में इन का कोई उल्लेख ही नहीं है। केवल मानव मन में व्याप्त भय तथा सांसारिक कारणों से जीवन में आने वाली कठिनाईयों का फायदा उठा कर कुछ लोगों ने मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण का एक तंत्र विकसित कर लिया है जिसे चालाकी से धार्मिक रूप दे दिया गया है।

वेद, उपनिषदों तथा दर्शन में किसी भी रूप में आत्माओं के भटकने, उनसे वार्तालाप करने आदि का कोई भी उल्लेख नहीं है। किंतु इन ग्रंथों के ज्ञान से अंजान व्यक्ति केवल धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर लुटता चला जाता है।

गीता में स्पष्ट लिखा है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े बदलकर नये कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर ईश्वर की व्यवस्था अनुरूप नये शरीर को धारण करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसी बात का समर्थक है।

वास्तव में अंधविश्वास के इस धंधे से रोजी रोटी कमाने वाले इन चालाक लोगों ने विज्ञान को ही अपना माध्यम बनाया हुआ है। विज्ञान की रासायनिक क्रियाओं, विधियों का प्रयोग कर ये लोग चमत्कार आदि दिखाकर लोगों के मन में अपनी पैंठ जमा लेते हैं। और बाद में ऐसे लोगों का शोषण करते हैं। उदाहरण के रूप में परमैंगनेट ऑफ पोटास को ग्लिसरीन पर गिरा कर आग प्रकट करना, कटहल के दूध लगे चाकू से नींबू काटने पर खून टपकना दिखाना, नौसादर तथा चूने के मिश्रण को सूंघा कर बेहोशी दूर करना तथा बिच्छू के डंक का उपचार करना। फिटकरी के घोल से पहले लिखना जो दिखाई न दे फिर बाद में उस पर चुकन्दर के रस को प्रयोग कर उसे दिखाना जैसे अनेकों प्रकार के तंत्र–मंत्र, जादू टोने–टोटके के पीछे विज्ञान तथा उसकी विधियां छुपी हुई हैं न कि कोई रहस्यमयी शक्ति।

इसलिए सर्वप्रथम तो मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार में दुःख–तकलीफ आने पर उसके कारणों को खोज कर निवारण करे। धार्मिक अंधविश्वास से बचे, वेद उपनिषद आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। जिससे धर्म का सत्य ज्ञान हो सके तथा यदि कोई चालाक तंत्र मंत्र के नाम पर भोले भाले लोगों को ठग रहा हो तो विज्ञान के माध्यम से बेनकाब करे। क्योंकि वेद कहते हैं "अंधन्तम प्रतिशन्ति ये अविद्याम् उपासते" जो अविद्या रूपी अंधकार में गिरते हैं इसलिए ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करे न कि तंत्र–मंत्र तथा पाखण्ड से।

–जिला प्रधान आर्य समाज जिला सभा विज्ञान नगर, कोटा

शोक समाचार

१. आर्य समाज ढाना–गढ़मुक्तेश्वर जिला हापुड़ के प्रधान चौ० शोवीर सिंह आर्य के पूज्य पिता श्री बल्ली सिंह जी का देहावसान हो गया। वे एक अच्छे समाजसेवी एवं धार्मिक विचारों के पुरुष थे उनके जाने से ग्राम में तथा परिवार में शोक वातावरण व्याप्त हो गया सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरनन्द जी सरस्वती ने अपनी शोक संवेदना व्यक्त की और परिवार के प्रति आत्मीयता एवं धैर्यधारण की शक्ति की प्रार्थना है आर्य मित्र परिवार भी उन . ति शोक संवेदना व्यक्त करता है।

२. आर्य समाज स्याना के स्तम्भ रहे श्री बालमुकन्द जी आर्य जो प्रतिवर्ष एक वेद पारायण यज्ञ कराते रहे उनके पुत्र देवेन्द्र आर्य एवं दयानन्द आर्य एवं बु० शहर में सुनील आर्य भी प्रतिवर्ष वेदपारायण यज्ञ कराते रहे हैं – देवेन्द्र आर्य के बड़े पुत्र वेदप्रकाश आर्य का आचानक डेंगू बुखार की चपेट में आने से ११ नवम्बर को मेरठ अस्पताल में देहान्त हो गया उनका शान्तियज्ञ स्याना जवाहरगंज मण्डी में सम्पन्न हुआ जिसमें स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सभामंत्री एवं आचार्य शिव कुमार जी शास्त्री आचार्य अरविन्द आर्य गुरुकुल पूठ तथा गुरूकुल नौएड़ा के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ सम्पन्न किया। परिवार के लिए शोक संवेदना व्यक्त की।

३. आर्य समाज ततारपुर के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री राजपाल आर्य फौजी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया उनका शान्तियज्ञ परिवार में आर्य समाज द्वारा सम्पन्न हुआ।

४. आर्य समाज टीला के संरक्षक एवं जिला सभा गा० बाद के विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित श्री हरप्रसाद जी पथिक की मृत्यु पर आर्य प्रतिनिधि सभा शोक व्यक्त करती है साथ ही परमात्मा से प्रार्थना है कि आत्मीय परिवार में इस दुःख को सहन करके की शक्ति प्रदान करें।

५. आर्य समाज मुरादपुर–हापुड़ के कोषाध्यक्ष नितिन आर्य पूज्यपिता श्री उपेन्द्र जी का स्वर्गवास हो गया उनका शान्तियज्ञ स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की गई।

६. आर्य उपप्रतिनिधिसभा हापुड़ के मंत्री अशोक आर्य जी ने अपने पूज्य पिता श्री राजेन्द्र प्रसाद जी आर्य की स्मृति में यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ में गुरुकुल पूठ से स्वामी धर्मेश्वरनन्द जी को आमन्त्रित किया उन्होंने यज्ञ में परिवार के लिए उनके आदर्शो पर चलने के लिए प्रेरित किया वे बड़े उदारवादी दानशील समाज सुधारक थे आप भी उनके गुणों को धारण करें।

बाबा अवध बिहारी दास का स्वर्गवास

सन्त कबीर नगर जनपद के मेहदावल आर्य समाज के संरक्षक बाबा अवध बिहारी दास (वानप्रस्थी) जी का स्वर्गवास २६ नवम्बर, १३ को हो गया वह इधर काफी दिनों से बीमार थे। बाबा अवध बिहारी दास स्वतंत्रता सेनानी थे। आर्य समाज का प्रचार प्रसार जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में खूब किया तथा कई नई आर्य समाजें स्थापित किया आप कुंवर सुख लाल जी के साथ भजन भी गाया करते थे। आपकी मृत्यु के समाचार से आर्य जगत में शोक व्याप्त हो गया। सभी ने मृतक की आत्मा की शान्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

–विमल किशोर आर्य, लखनऊ

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा की साधारण बैठक दिनांक–२३ जनवरी, २०१४ बृहस्पतिवार माघ कृष्ण पक्ष सप्तमीं को प्रातः ११ बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा। एजेण्डा सभी को डाक द्वारा भेजा जा रहा है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

बृहदाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों, सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक–२३ एवं २४ जनवरी, २०१४ बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार (माघ कृष्ण पक्ष सप्तमीं एवं अष्टमी) को प्रातः ११ बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा। एजेण्डा एवं विस्तृत कार्यक्रमों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेजी जा रही है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

श्रीराम जी ने बालि को छल से क्यों मारा

—आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री

वाल्मीकि रामायण में इस प्रश्न का समुचित उत्तर दिया गया है श्रीराम ने जब बालि को मार दिया तब बालि ने श्रीराम से धर्मयुक्त कठोर वचन कहा हे राम तुम राज कुल में उत्पन्न तेजस्वी और व्रतधारी हो इन गुणों से युक्त तुम्हारी कीर्ति संसार में सभी मनुष्य गा रहे हैं।

दमः शमः क्षमा धर्मो धृतिः सत्यं पराक्रमः।

पार्थिवानां गुणा राजन् दण्ड चाव्यपराधिषु।। (वाल्मीकि कि० १२/५)

मनोनिग्रह, शान्ति, क्षमा, धर्म, धैर्य, सत्य, पराक्रम और अपराधियों को दण्ड देना ये राजाओं के गुण है।

आप श्रेष्ठ कुलोत्पन्न हैं मैं दूसरे के साथ युद्ध में प्रवृत्त था मैं नहीं जानता था कि तुम आत्मघाती, कोरी धर्म की ध्वजा उठाने वाले तृणों से ढ़के हुए कुएँ की भांति अधर्मी और पापाचारी हो। मैंने आपका कोई अपमान नहीं किया फिर आपने मुझ निरपराध को क्यों मारा।

मुझ निरपराधी को तीर से मार करके ऐसा घृणित कर्म करके तुम सज्जनों के बीच में क्या कहोगे। ये लोग नरक को जाते है—

राजहा ब्रह्महा गोघ्नश्चोरः प्राणिवधे रतः।

नास्तिकः परिवेत्ता च सर्वे निरयगामिनः।। (कि० १२/१८)

राजा को मारने वाला, ब्राह्मण की हत्या करने वाला, गोघाती, चोर प्राणियों की हिंसा में तत्पर, नास्तिक और परिवेत्ता (बड़े भाई से पहले विवाह करने वाला) ये सब नरकगामी अधम योनि में जाते है।

हे राम, धूर्त, परउपकारी, बनावटी शान्ति को धारण करने वाला आप जैसा पापी पुत्र महात्मा दशरथ के यहां कैसे उत्पन्न हो गया। यदि तुम मेरे सम्मुख होकर युद्ध करते तो तुम्हें आज ही यमराज का अतिथि बनना पड़ता। तुमने तो मुझे छिपकर मारा जैसे मद्यपान के वश में सोये हुए व्यक्ति को साँप काट लेता है।

मुझे अपनी मृत्यु का दुःख नहीं है एक दिन सभी जीवधारी को मृत्यु अवश्य ही प्राप्त होती है मुझे केवल दुःख इस बात का है कि आप इस अनुचित कृत्य का लोगों को क्या उत्तर दोगे।

श्रीराम ने बालि को उत्तर दिया—

धर्ममर्थं च कामं च समयं चापि लौकिकम्।

अविज्ञाय कथं वाल्यान्मामिहाद्य विगर्हसे।।

अरे वाली! धर्म अर्थ, काम और लौकिक आधार को जाने बिना ही तुम मूर्खतावश मेरी निन्दा क्यों कर रहे हो।

हे सौम्य! मान्य आचार्यो और बुद्धिमान बड़े बूढ़ों से बिना पूछे वानर स्वभाव वश चपलता से तुम मुझे इस विषय में उपदेश दे रहे हो।

इक्ष्वाकणाभियं भूमिः सशैल वन कानना।

मृग पक्षि मनुष्याणां निगूहानुग्रहेष्वपि।। (कि० १३/४)

क्या तुम्हें पता नहीं है कि वन, पर्वत, वाटिका आदि से परिपूर्ण यह समस्त भूमण्डल इस्वाकुवंशियों के अधिकार में हैं। इस अखिल भूमण्डल में जितने पशु, पक्षी और मनुष्य रहते है उन सबको दण्ड देने अथवा उनपर अनुग्रह करने का अधिकार उन्हीं को है।

महात्मा भरत इस समय भूमण्डल पर शासन कर रहे हैं। नीति, नम्रता, सत्य, पराक्रम जिसमें विद्यमान हो वही राजा होने के योग्य है भरत में सभी गुण विद्यमान हैं। हम दोनों भाई भरत के धर्मानुकूल आदेश से धर्मवृद्धि की कामना से इस समय सम्पूर्ण पृथ्वी का भ्रमण कर रहे हैं। कोई भी मनुष्य धर्म विरुध कार्य न करें, धर्म मार्ग पर आरुढ़ रहने वाले हम लोग भरत की आज्ञा का पालन करते हुए धर्म विरुद्ध आचरण करने वाले लोगों को दण्ड दिया करते हैं। तुम केवल धर्म का हनन करने वाले काम के दास बनकर राज धर्म की उपेक्षा कर रहे हो।

ज्येष्ठों भ्राता पिता चैव यश्च विद्यां प्रयच्छति।

त्रयस्ते पितरो ज्ञेया धर्मे च पथि वर्तिनः।।

धर्ममार्ग पर चलने वाले ज्येष्ठ भ्राता, पिता और विद्यादाता गुरु ये तीनों ही पिता तुल्य माने जाते है। यवीयानात्मनः पुत्रः शिष्यश्चापि गुणोदितः।

पुत्रक्ते त्रयश्चिन्त्या धर्मश्चेदत्र कारणम्।। (कि०१३/१२)

धर्म की व्यवस्था के अनुसार छोटा भाई, पुत्र और गुणवान शिष्य ये तीनों पुत्र के तुल्य माने जाते है।

सूक्ष्मः परमदुर्ज्ञेयः सतां धर्मः प्लवंगम।

हे वानर! सज्जनों का धर्म ऐसा सूक्ष्म हे कि सहज में उसे कोई जान नहीं सकता है। अतः तुम केवल रोष में भरकर मुझे दोषी ठहरा रहे हो। मानवीय परम्परागत धर्म को छोड़कर तुम अपने छोटे भाई सुग्रीव की पत्नी का उपभोग कर रहे हो इसी कारण मैंने तुम्हें प्राण दण्ड दिया है।

महात्मा सुग्रीव के जीवित रहते हुए उनकी भार्या रूमा के साथ जो तुम्हारी पुत्र वधू के समान हे तुम कामासक्त होकर पापाचरण कर रहे हो। धर्म विरूद्ध कामुकता के व्यवहार की सजा प्राणदण्ड ही है।

तुमने धर्म की मर्यादा का उल्लंघन किया है। सुग्रीव मेरा मित्र है मेरे कल्याण के लिये प्रतिबद्ध है मित्र का उपकार करना धर्म है ऐसा समझ कर मैंने तुम्हें दण्ड दिया है।

रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने भी लिखा है—

अनुज वधू भगिनी सुतनारी सुनशठ ये कन्या समचारी।

इन्हें कुदृष्टि विलोकै जोई, ताहि वधे कछु पाप न होई।

धर्म को दृष्टि में रखते हुए तुम्हें उचित था कि तुम प्रार्थना पूर्वक इस दण्ड को ग्रहण करते। महर्षि मनु ने भी कहा है —

राजभिर्धृत दण्डास्तु कृत्वा पापानि मानवाः।

निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनों यथा।।

जो मनुष्य पाप कर्म करने पर राजा द्वारा दण्डित किये जाते है, वे पाप से मुक्त होकर पुण्यात्मा पुरूषों की भांति स्वर्गवासी होते हैं।

जो पापी राजा के पास जाकर अपने पाप को स्वीकार कर लेता है और दण्ड चाहता है उसे राजा चाहे दण्ड दे अथवा क्षमा करें दोनों अवस्थाओं में पापी पाप मुक्त हो जाता है। किन्तु पापी को पाप दण्ड न देने से राजा स्वयं पाप का भागी हो जाता है।

आपको जो प्राण दण्ड दिया गया है वह धर्म की रक्षा के लिये दिया गया है। इस विषय में हम स्वतन्त्र नहीं हैं किन्तु धर्मशास्त्र के आधीन है।

हे वानर राज मैंने तुम्हें जो छिपकर मारा है इसके लिये मेरे मन में न कोई सन्ताप है और न कोई दुःख ही है। क्योंकि शिकारी लोग जाल फंदा और अनेक प्रकार के छल के द्वारा छिपकर या प्रत्यक्ष रूप में भागते हुए अथवा विश्वास पूर्वक बैठे हुए मृगों को पकड़ा ही करते हैं।

त्वं तु धर्ममविज्ञाय केवलं रोष मास्थितः।

तुम धर्म को न जानकर केवल क्रोध के वशीभूत होकर पिता—पितामह के मर्यादित धर्मपक्ष पर चलने वाले मेरे ऊपर दोषारोपण कर रहे हो।

श्रीराम के नीतियुक्त वचन को सुनकर बालि को बड़ा पश्चाताप हुआ। दण्ड का धार्मिक निर्णय हो जाने पर बालि ने श्रीराम को निर्दोष पाया।

तब हाथ जोड़कर श्रीराम से कहने लगा हे पुरुषोत्तम आप जो कहते हैं वह निःसन्देह उचित है। मैंने प्रमादवश पहले अप्रिय वचन कहे हैं वह मैंने दुःखी अवस्था में कहे हैं मुझे अपने विषय में व तारा के विषय में कोई चिन्ता नहीं हैं केवल अंगद की चिन्ता है वह अभी अपरिपक्व है आपके द्वारा सर्वथा रक्षणीय है। आप ही उसकी रक्षा करना।

बालि राम द्वारा मारा गया समाचार सुनकर तारा महल से दौड़ती हुई बाहर आई व्यथित होकर भूमि पर गिर पड़ी। और करूण क्रन्दन करने लगी तब तारा को हनुमान ने समझाया —

गुणदोष कृतं जन्तुः स्वकर्म फल हेतुकम्।

अव्य ग्रस्त दवाप्नोति सर्व प्रेत्य शुभाशुभम्।। (कि० १५—२)

प्राणी अपने किये हुए अच्छे या बुरे कर्मो का फल सुख अथवा दुःख मरने के पश्चात् भी भोगते हैं। आप किसके लिये शोक कर रही है। जल के बुद बुदे के समान यह जीवन क्षण भंगुर है फिर कौन किसके लिये शोक करेगा। बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि सदा उत्तम कर्म ही करें।

बालि ने सुग्रीव से कहा —

हे सुग्रीव पूर्वजन्म के कुसंस्कारों के कारण तथा बुद्धि के विपरीत होने से मैंने तुम्हारे प्रति जो व्यवहार किया उसके लिये तुम मुझे दोषी मत समझना। हे तात! हम दोनों के भाग्य में दोनों भाईयों को एक साथ राजभोग सुख एवं शांति पूर्वक रहना नहीं लिखा था। आज ही तुम समृद्ध राज्य को प्राप्त कर लो मैं आज ही यमपुरी को प्रस्थान कर रहा हूँ।

जो लोग राम पर यह लांछन लगाते है कि उन्होंने बालि को छिपकर धोखे से क्यों मारा उसका उत्तर श्रीराम ने स्वयं शास्त्र प्रमाण से सिद्ध करके दिया है।

—वेद मन्दिर शिवनगर
देवांरोड, चिनहट—लखनऊ

भूल सुधार

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन गढ़ मुक्तेश्वर—हापुड़ (उ.प्र.) के प्रकाशित विवरण में निम्नलिखित विवरण भूल से छपने से रह गया था जिसका खेद है। कृपया दिनांक 19 से 26 नवम्बर के अंक में पृष्ठ 6 के कालम 4 में जोड़कर पढ़ें। ...सम्पादक

आर्य परिवार निर्माण संकल्प सम्मेलन इस सम्मेलन की विशेष उपलब्धि रही। सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए चौ० ओमवीर सिंह राणा ग्रुप शुगर मिल के उपाध्यक्ष—राजा का सहसपुर बिलारी, मुरादाबाद से आमंत्रित किया गया आपने अपने परिवार का निर्माण सच्चे आर्य के रूप में किया है अपने परिवार को रामायण के रूप में प्रस्तुत करके समाज में उदाहरण आर्यत्व का दिया है पूरे परिवार में सभी आबाल वृद्ध आर्य विचारों से ओत प्रोत हैं। आप मूल रूप से मेरठ जनपद के खानपुर ग्राम के हैं और शौदानसिंह आर्य से बहुत घनिष्ठता है। आपका भाषण भी सभी को प्रभावित करने वाला था मुख्य अतिथि के रूप में गढ़मुक्तेश्वर के उपजिलाधिकारी जय शंकर जी मिश्र को आमन्त्रित किया गया आपने अपने सुलझे विचारों से परिवार की एकता परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरण कैसे हो सकता है पिता पुत्र भाई—भाई एवं माता—सास—बहू के विचारों की साम्यता क्यों जरूरी है उसके भी उपाय बताकर आर्य जनता को लाभान्वित किया तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बताया कि हमारे कार्य को आप सुलभ बना रहे है हमारी समस्याओं का आप समाधान वेद के माध्यम से कर रहे हैं। अतः मैं आपका आभारी हूँ यह सन्देश प्रदेश नहीं अपितु पूरे देश के घर घर में जाये और आदर्श परिवारों का निर्माण हो तभी सुखशान्ति सम्भव हो सकती है। विशेष अतिथि के रूप में पिलखुआ नगर पालिका अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जी श्रोरी तथा शौदान सिंह आर्य मेरठ, डॉ. अभय सोती, मुरादाबाद—हरवीर सिंह सुमन मेरठ बिजेन्द्र सिंह आर्य अटौला रमेश आर्य एडवोकेट राममुनि आर्य समाज गंज मुरादाबाद, सुभाष सिंघल मा. ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य—तेजपाल सिंह आर्य आ.स. चन्द्रपुरी गा.बाद मंच की शोभा बढ़ा रहे थे जिला सभा हापुड़ के अधिकारियों ने स्वागत किया मुख्यरूप से जोगेन्द्र सिंह सेहल, महावीर सिंह श्यामपुर, मा. रामवीर सिंह जितेन्द्र सिह बबलू भगवानपुर डॉ. जयवीर सिंह श्यामपुर जट्ट, मुकेश आर्य खैया, कुंवरपाल आर्य हापुड़, ज्ञानेन्द्र चौ. जरौठी, व्रतपाल शास्त्री सिम्भावली, सुरेन्द्र सिंह आर्य लहडरा, महेश आर्य—अशोक आर्य बहादुरगढ़, वीरेन्द्र सिंह एडवोकेट आलमनगर—दिनेश खेड़ा—डॉ. धर्म वीर सिंह मानक चौक तेजवीर सिंह मुखिया—वीरपाल सिंह आर्य ततारपुर—महीपाल सिंह निजामपुर आदि—आदि आर्यो ने विकास आर्य हापुड़—अशोक आर्य पिलखुआ तथा अनिल आर्य गढ़मुक्तेश्वर के साथ सभी अतिथियों का स्वागत किया गया।

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानंद काशी शास्त्रार्थ का 144वाँ स्मृति दिवस समारोह

दयानंद ने शास्त्रार्थ द्वारा विलक्षण धार्मिक क्रान्ति का सूत्रपात किया

दयानंद ने १९वीं शताब्दी में शास्त्रार्थ द्वारा विलक्षण क्रान्ति का सूत्रपात कर सभी सम्प्रदाय के लोगों को जगाया, उन्होंने १८६९ ई० में काशी के प्रकाण्ड विद्वानों से शास्त्रार्थ कर एकेश्वरवाद तथा धर्म के सत्य स्वरूप को प्रतिष्ठित किया था, आज भी गुरूडम, चमत्कार तथा चंगाई कार्यक्रमों से निवृत्ति के लिये शास्त्रार्थ की प्रासंगिकता बनी हुयी है, उक्त विचार काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित दयानंद काशीशास्त्रार्थ के १४४ वें स्मृति दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि श्रीरमाशंकर आर्य पूर्व उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ ने व्यक्त किये।

आर्य विद्वत परिषद काशी के अध्यक्ष पं० ज्ञान प्रकाश आर्य, आर्य विदुषी डा० गायत्री आर्या, पूर्व सभासद श्री लीलाराम सचदेवा, काशी आर्य समाज के मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने अपने व्याख्यानों में आज के परिवेश में शास्त्रार्थ की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

श्री श्रीनाथ सिंह पटेल की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी में सर्वश्री डाक्टर विशाल सिंह, संजय सिंह एडवोकेट, बृजभूषण सिंह, मोतीलाल आर्य, लालचंद आर्य, हरिहर प्रसाद सेठ, सरोज कु० मिश्रा, एस०एन० प्रसाद कुशवाहा, रमेश जी आर्य आदि ने अपने विचार रखें। श्रीमती प्रतिमा सिंह ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, रमेश जी आर्य तथा श्री मोतीलाल आर्य, तथा डा० गायत्री आर्या, राजकुमार आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया। अतिथियों का स्वागत, डा० विशाल सिंह–कोषाध्यक्ष ने किया संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री तथा धन्यवाद प्रकाश लालचंद आर्य ने किया।

–प्रकाश नारायण शास्त्री

जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने परिवार सहित नेत्रदान का संकल्प लिया

कोटा, ६ नवम्बर। कोटा में नेत्रदान के प्रति जागरूकता लगातार बढ़ती जा रही है। लोग व्यक्तिगत या समूह में आकर नेत्रदान करने का संकल्प कर रहे है।

जिला प्रधान आर्य समाज कोटा के अर्जुन देव चड्ढा का परिवार इसका एक उदाहरण है जिनके घर में पहला नेत्रदान वर्ष १९८७ उनके पिताजी श्री रामलाल चड्ढा जी का हुआ जिस समय नेत्रदान के बारे में जानकारी का अभाव था। इसके बाद उनकी पत्नी श्रीमती संतोष चड्ढा जी का देहान्त वर्ष १९९७ में हुआ उनका भी नेत्रदान लिया गया। इसी तरह वर्ष २०१० में इनके बड़े भाई श्री बलदेव राज चड्ढा का भी नेत्रदान किया गया।

आज सम्पूर्ण परिवार के १८ सदस्यों ने एक साथ इस नेक कार्य नेत्रदान महादान का संकल्प लिया।

अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि जब से कोटा में शाइन इण्डिया फाउण्डेशन की स्थापना हुई है तभी से कोटा में नेत्रदान के प्रति अधिक जागरूकता के कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि पिछले कुछ महिनों से कई नेत्रदान कोटा में संभव हुए हैं। अभी और अधिक इस संदर्भ में जागरूकता की आवश्यकता है। शाइन इण्डिया के सभी पदाधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

डॉ० कुलवन्त गौड़
अध्यक्ष, शाइन इण्डिया फाउण्डेशन

आर्य समाज एटा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज एटा का १२८ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १७–१८–१९ नवम्बर २०१३ को आर्य समाज मन्दिर आर्य समाज मार्ग एटा में सोल्लास सम्पन्न हुआ।

जिसमें नित्य प्रातः ८ से ११:३० तक यज्ञ भजन प्रवचन एवं सायं ७:३० से ९:३० तक भजन व प्रवचन हये।

दिनांक १७ अक्टूबर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक युवा सम्मेलन

दिनांक १८ अॅक्टूबर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक महिला सम्मेलन

दिनांक १९ अक्टूबर को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक शिक्षा सम्मेलन

आयोजित किये गये। उत्सव में आदित्य ब्रह्मचारी महात्मा प्रभुवेश (विधूना) आचार्य वेद प्रकाश श्रीत्रिय देहली आचार्य वागीश शर्मा आर्ष गुरूकुल एटा आचार्य ब्रह्म नारायण शास्त्री फतेहपुर डा राम प्रकाश वर्णी (जसराना) आचार्यो शोभा भजनोपदेशिका फतेहपुर, डा० तुलसीदेवी फिरोजाबाद, डा० विजेन्द्र कुमार कासगंज, कमलदेव भजनोपदेशक मथुरा सत्येन्द्र कुमार भजनोपदेशक एटा के उपदेशों व भजनों को श्रोताओं में हृदयंगम किया।

–डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री, मंत्री

आर्य समाज मान्धीधाम में दिव्य वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्य समाज गांधीधाम महर्षि दयानन्द मार्ग झण्डा चौक के पास गांधीधाम कच्छ का वार्षिकोत्सव दिव्य वैदिक सत्संग समारोह के रूप में दिनांक १३ से १५ दिसम्बर १३ तक आयोजित किया गया है जिसमें आचार्य नन्दिता शास्त्री आचार्या पाणिनीय कन्या महाविद्यालय वाराणसी एवं महाविद्यालय की छात्राएं पं० कमलेश कुमार अग्निहोत्री अहमदाबाद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती पलवल एवं श्री सत्यानन्द वेदवागीश जी के जीवनोद्धारक वेदोंपदेश सुनने का सुयोग रहेगा। कार्यक्रम नित्य प्रातः ८ से रात्रि ८:३० बजे तक चलेगा। अन्तिम दिन दोपहर १२:३० बजे कार्यक्रम की पूर्णाहुति होगी।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में बहुकुण्डीय देव यज्ञ विविध पारिवारिक विषयों पर सम्मेलन होंगे। पुस्तक मेला भी लगेगा। अन्तिम दिन कण्डला बन्दरगाह दिखाने की भी व्यवस्था होगी।

बाचोनिधि आचार्य, महामंत्री

अपनी आत्मा को करें ज्ञान से प्रकाशित

आर्य समाज ने मनाया महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

कोटा, ६ नवम्बर। हमें अपनी आत्मा को ज्ञान से प्रकाशित करना चाहिए। वैदिक ज्ञान आत्मा के अज्ञान तथा अंधविश्वास को दूर करता है। यह बात आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने रविवार ०३ नवम्बर २०१३ को आर्य समाज गायत्री विहार में कोटा की सभी आर्य समाजों द्वारा संयुक्त रूप से मनाये गये महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस और शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली) पर्व के अवसर पर आयोजित समारोह में कही।

इस अवसर पर श्रीमती सुदेश आहूजा व्याख्याता राजकीय महाविद्यालय कोटा, आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, गायत्री विहार आर्य समाज के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम के अध्यक्ष राजस्थान प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान हरिदत्त शर्मा थे। कार्यक्रम में जिला आर्य सभा कोटा द्वारा दशहरा मेले में आयोजित वैदिक साहित्य एवं महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शनी में किये गये उल्लेखनीय सेवा कार्यों के उपलक्ष में महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री अरविन्द पाण्डेय का आर्य समाज जिला सभा द्वारा शॉल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया, साथ ही आर्य समाज गायत्री विहार द्वारा दशहरा मेला चित्र प्रदर्शनी में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए पं० क्षेत्रपाल आर्य और श्योराज वशिष्ठ को माल्यार्पण और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में श्रीमती सुशीला कुर्मी, श्रीमती उषा भटनागर और बालिका विभूती वासुदेव द्वारा सुमधुर भजन प्रस्तुत किये।

अरविन्द पाण्डेय, प्रधान
आर्य समाज गायत्री विहार

चौराहे पर खड़े होकर बेचे "सत्यार्थ प्रकाश"

कोटा, ६ नवम्बर। महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" कोटा महानगर के भीड़ भरे चौराहे चौपाटी बाजार में आर्य समाज जिला सभा कोटा के पदाधिकारियों ने ५०० पृष्ठों का ५०रू० कीमत का सत्यार्थ प्रकाश मात्र रू० १०/– में आवाज लगा–लगाकर बेचा।

आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा माइक से सत्यार्थ प्रकाश की विशेषताएं बता रहे थे। इससे प्रभावित होकर मुस्लिम, सिख, छात्र–महिलाएं लाइन लगाकर सत्यार्थ प्रकाश खरीद रहे थे।

–अरविन्द पाण्डेय, कार्यालय संचिव

तहसील सण्डीला में पशु वधशाला बनाने का घोर विरोध

आर्य समाज हरदोई के १२८ वें वार्षिकोत्सव पर जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरदोई की ओर से दिनांक १४–१०–१३ को आयोजित विशाल सभा में तहसील सण्डीला में राज्य सरकार द्वारा पशु वधशाला स्थापित किये जाने का घोर विरोध किया गया और सर्वसम्मति से इसके विरूद्ध एक प्रस्ताव पारित करके सैकड़ों लोगों के हस्ताक्षर से युक्त प्रस्ताव में सरकार से अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का अनुरोध किया गया। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि यदि सरकार ने सकारात्मक निर्णय नहीं लिया तो इसके विरूद्ध आन्दोलन करने को आर्य समाज विवश होगा।

वंशीधर शुक्ल, प्रधान
आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरदोई

www.thearyasamaj.org

दयानंद ने आत्मविस्मृत राष्ट्र में जागरण का शंखनाद किया

१६वीं शती में स्वामी दयानंद एक विलक्षण सन्यासी हुये, जिन्होंने पराधीनता से आक्रान्त भारत के जन–मानस को स्वाभिमान, आत्मसम्मान का पाठ पढ़ाया और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का माड्यूल प्रस्तुत किया। उक्त विचार काशी आर्य समाज के समाकक्ष में आयोजित ''दयानंद निर्वाण दिवस समारोह'' ३ नवम्बर को मुख्य अतिथि डा० जय प्रकाश भारती– पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने व्यक्त किये।

आर्य विदुषी डा० गायत्री आर्या आर्य विद्वान पं० ज्ञान प्रकाश आर्य, प्रकाश नारायण शास्त्री मंत्री काशी आर्य समाज, डा० विशाल सिंह, संजय सिंह एडवोकेट, विवेक सिंह एडवोकेट, लालचंद आर्य मोतीलाल आर्य, रमेश जी आर्य, साक्षी आर्य एवं सत्यनिष्ठा आर्य, विभा आर्या, हेमा आर्या, राजकुमार विश्वकर्मा ने भी विचार व्यक्त किये।

अध्यक्षीय सम्बोधन आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने किया।
अतिथियों तथा उपस्थित आर्य जनों का स्वागत डा० विशाल सिंह कोषाध्यक्ष, माल्यार्पण लालचंद आर्य तथा संयोजन एवं संचालन श्री प्रकाश नारायणी शास्त्री ने किया। धन्यवाद प्रकाश – श्री श्रीनाथ सिंह पटेल नें किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ।

प्रकाश नारायण शास्त्री
मंत्री

गुरुविरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर एवं गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का ४७ वाँ व श्री गुरू विरजानन्द गुरूकुल महाविद्यालय करतारपुर पंजाब का ४३ वा वार्षिकोत्सव दिनांक १४ अक्टूबर २०१३ से २० अक्टूबर २०१३ तक ससमारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें नित्य प्रातः सायं यज्ञ भजन व विद्वानों के प्रवचन हुये। उत्सव की अध्यक्षता डा० स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती कुलपति गुरुकुल ने की।

उत्सव में १८ तारीख को अन्तर गुरुकुल मन्त्रोंच्चारण व वाक्प्रतियोगिता दोपहर २ बजे से ६ बजे तक हुयी जिसमें ब्रह्मचारियों की प्रतिमा का प्रदर्शन मिला। १६ ता० को प्रातः १० बजे से १ बजे तक गुरू विरजानन्द सम्मेलन हुआ जिसमें वक्ताओं ने भारतीय संस्कृति के उत्थान में गुरुकुलों की भूमिका पर विस्तृत प्रकाश डाला। दोपहर २ बजे से ५ बजे तक महिला सम्मेलन में वक्ताओं ने नारी उत्थान के उपायों पर विचार प्रस्तुत किया सायं ७:३० से ६:३० बजे तक भजन संध्या का रोचक कार्यक्रम हुआ। २० तारीख को प्रातः ६:४५ से १२:१५ तक राष्ट्रीय चरित्र निर्माण सम्मेलन हुआ फिर १२:१५ से १:३० बजे तक गुरुकुल की वार्षिक उपलब्धियों का विवरण तथा ब्रह्मचारियों के रोचक कार्यक्रम हुए। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर का भी आयोजन हुआ।

अश्विनी कुमार शर्मा
महामंत्री

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नवाबगंज गोण्डा का ८७वा वार्षिकोत्सव ६ नवम्बर से ६ नवम्बर, २०१३ को स्थानीय डी.ए.वी. इण्टर कालेज के प्रांगण में धूमधाम के साथ मनाया गया जिसमें प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ हुआ।

उत्सव में युवा उपदेशक श्री संजीव रूप बदायूँ, वैदिक प्रवक्ता श्री विमलकिशोर आर्य, लखनऊ कु. शशि आर्या भजनोपदेशिका पीलीभीत, स्वामी शिवानन्द जी नोयडा आदि के भजन उपदेश हुये। मुख्य अतिथि–श्री राम कृपाल सिंह प्रशासक नन्दिनी पी.जी. कालेज थे। कायक्रम को सफल बनाने में श्री ब्रजभूषण सिंह सांसद एवं प्रबन्धक डी.ए.वी. कालेज गोण्डा प्रधानाचार्य श्रीमान् प्रताप सिंह, त्रिभुवननाथ आर्य, शैलेन्द्र कुमार आर्य,, श्याम बाबू अम्बरीश आर्य उपेन्द्र आर्य का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 130वॉ बलिदान समारोह

आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर में दिनांक ०३.११.२०१३ दिन रविवार को दीपावली व महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्माण पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य राकेश कुमार आर्य जी ने राष्ट्र को सुख समृद्धि हेतु वेदमंत्रों से देवयज्ञ से कराया।.

कार्यक्रम को सफल बनाने में बाबू राजपाल सिंह चाहल ऐड० सुरेन्द्र पाल सिंह, डा० नरेश कुमार, गुलबीर सिंह आर्य, मंगल सिंह आर्य, आनन्द स्वरूप आर्य, देवी सिंह आर्य, वीरेन्द्र सिंह आर्य, मास्टर सोमपाल सिंह आर्य, इं० रणवीर सिंह आर्य का विशेष सहयोग रहा। समारोह के अध्यक्षता आर्यरत्न आचार्य गुरुदत्त आर्य ने की। इस अवसर पर नगर व नगर की सभी समाजों से सदस्य उपस्थित हुए। वैदिक साहित्य क्रय हेतु हानि–लाभ रहित उपलब्ध कराया गया। मिष्ठान्न वितरण तथा जलपान के साथ समारोह का समापन हुआ।

–आर०पी० शर्मा

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन के मीडिया एलबम का विमोचन

कोटा, २८ अक्टूबर ! दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा (कोटा) द्वारा तैयार की गई एलबम के विमोचन के अवसर पर डॉ. वागीश आचार्य ने कहा कि आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन के इस कार्य का और अधिक विस्तार कर प्रान्तीय स्तर पर आयोजन किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि आर्य परिवारों को जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

अर्जुनदेव चड्ढा
राष्ट्रीय संयोजक

मुस्लिम नवयुवक का शुद्धि संस्कार

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ में दिनांक १३.१०.२०१३ को श्री असलम अली आयु २३ वर्ष का शुद्धि संस्कार हुआ जिसके पश्चात् इनका नाम 'समीर' रखा गया।

–श्रीमती आरती सक्सेना
उपमन्त्रिणी

आर्य पुरोहितों की आवश्यकता

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग) अलीगढ़ के लिए दो आर्य पुरोहितों की तुरन्त आवश्यकता है। जो शिक्षित वेद विद्वान एवं युवा हों तथा समर्पित भाव से वेदों एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों को प्रचारित करने में पूर्ण सक्षम एवं योग्य हों। अपना शैक्षिक एवं व्यवहारिक परिचय प्रधान/मंत्री आर्य समाज को भेजने का कष्ट करें। उनके निवास की स्थायी व्यवस्था है।

निराश्रित एवं वृद्ध वैदिक विद्वान केन्द्र प्रारम्भ

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग) अलीगढ़ वयोवृद्ध एवं निराश्रित वैदिक विद्वानों के आश्रय की निःशुल्क व्यवस्था की गई है।

भारत के किसी भी क्षेत्र के ऐसे वृद्ध जन हों, उनका संस्था में स्वागत होगा।

–राजेन्द्र पथिक
मंत्री
आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग अलीगढ़
मोबाइल–**9412671554**

आर्य समाज कविनगर गाजियाबाद का 38वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कवि नगर निकट चौधरी भवन गाजियाबाद का ३८वां वार्षिकोत्सव दिनांक २३ से २४ नवम्बर तक आयोजित किया गया। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर भजनोपदेशक श्रीमती सुदेश आर्य (दिल्ली) तथा वेद विदुषी कु. सुमेधा दिल्ली के वेदापदेशों एवं राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत भजनों की प्रस्तुति की गयी। नित्य प्रातः ८ से ६ बजे तक आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मात्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

दिनांक २२.११.१३ को प्रातः ६ से ११ बजे तक स्वामी चन्द्र वेश जी की अध्यक्षता में वेद सम्मेलन दोपहर २ बजे से सायं ५ बजे तक श्री चन्द्रपाल शास्त्री की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन २३.११.१३ को प्रातः ६ से ११ बजे तक श्री जयपाल सिंह आर्य की अध्यक्षता में परिवार सममेलन अपराह्न २ से ५ तक डॉ. बीना गर्ग की अध्क्षता में महिला सम्मेलन, २४.११.१३ को प्रातः ८ से ६:३० बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति ६:३० से १ बजे तक श्री माया प्रकाश त्यागी की अध्यक्षता में समाज एवं राष्ट्र सुधार सम्मेलन आयोजित किये गये।

–हरवीर सिंह, मंत्री

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२–२२८६३२८
प्रधान–०६४१२६७८५७१, मंत्री–०६८३७४०२१६२, सम्पादक–६५३२७४६६००
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में.

समस्या आपकी – समाधान हमारा

समस्या – आदरणीय डॉ. साहब, सादर सप्रेम नमस्ते।

मैं आर्य मित्र में प्रकाशित 'समस्या आपकी समाधान हमारा' नियमित रूप से पढ़ता हूँ। आप द्वारा विभिन्न शारीरिक समस्याओं (रोगों) का साधारण भाषा में दिया जा रहा समाधान, रोगों के बचाव व उपचार में बहुत ही लाभ दायक है। मैं अपनी भी एक समस्या का समाधान आपके "योग विशेषज्ञ" होने के नाते चाहता हूँ। आजकल हमारे विभिन्न रोगों व स्वास्थ्य की दृष्टि से अनेकों कार्यक्रम टी.वी. के विभिन्न चैनलों पर आते रहते हैं। उनमें से मैं भी योगासनों, प्राणायाम व क्रियाओं को देख–देख कर करने का प्रयास करता हूँ अभी तक मुझे कोई विशेष लाभ प्रतीत नहीं हुआ। क्या टी.वी. पर देखकर उनका अभ्यास करना उचित है।

–अमित आर्य, नई दिल्ली।

प्रिय श्री आर्य, आपको आर्य मित्र में प्रकाशित स्वास्थ्य सम्बन्धी स्तम्भ "समस्या आपकी समाधान हमारा" लाभ प्रद लगा, तदर्थ धन्यवाद!

आप द्वारा उठायी गयी समस्या, वर्तमान में एक सामान्य समस्या बनती जा रही है। आज घर–घर में टी. वी. मौजूद है जिनपद सुबह से लेकर रात तक किसी न किसी चैनल पर स्वास्थ्य व रोगों के उपचार सम्बन्धी तथाकथित आसनों, प्राणायाम व अन्य विभिन्न क्रियाओं का निरन्तर प्रचार प्रदर्शन होता रहता है। इनमें कुछ विज्ञापन के रूप में कुछ प्रायोजित कार्यक्रम के रूप में दिखाये जाते हैं। यही नहीं अब तो गली गली मोहल्ला–मोहल्लां में जहां तहां पार्कों, स्कूलों सामाजिक संस्थाओं में तथाकथित योगाचार्यों द्वारा अनावश्यक रूप से लोगों की शरीर रचना व क्रियाओं को प्रभावित किया जा रहा है जो कि शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से कदापि उचित नहीं है। आज 'योगा' करना व उसका प्रदर्शन व चर्चा करना एक "स्टेटस सिम्बल" हो गया है। आज जो तथाकथित योग नहीं करता वह स्वयं को समाज में लज्जित महसूस करता है।

यहां मैं आप सहित सभी जन सामान्य (आर्य जनों) का एक भ्रम दूर करना आवश्यक समझता हूँ। वर्तमान में प्रचार के विभिन्न माध्यमों से प्रचलित अनेक प्रकार के तथाकथित योगाभ्यास तथा आसन प्रणायाम यौगिक क्रियाओं का वेद सम्मत 'योग' से कुछ भी लेना देना नहीं है। इस हेतु महर्षि दयानन्द द्वारा मान्य वेद सम्मत् एक मात्र दर्शन–महर्षि पतंजलि का योग दर्शन ही है। जिसमें आजकल प्रचलित तथाकथित विभिन्न आसनों प्राणायामों व क्रियाओं आदि का कोई उल्लेख नहीं है। वास्तव में वेद सम्मत् महर्षि पतञ्जलि के योग का उद्देश्य तो आत्म दर्शन करते हुए परमात्मा का साक्षात्कार करना है। आसन के विषय में भी महर्षि पतञ्जलि ने साधन पाठ में स्पष्ट करते हुए कहा है–

स्थिर सुखमासनम्!।। यो.द. २/४६।।
प्रथत्नं शैथिल्यानन्त समापन्तिभ्याम्।। यो.द.२/४७।।

अर्थात् स्थिरतायुक्त सुखानुभूति सहित प्रयत्नों में शिथिलता व अनन्त (ईश्वर) में एकाग्रता स्थ करने की शारीरिक स्थिति विशेष "आसन" कहलाती हैं जिसका लाभ योगाभ्यासी को विभिन्न सांसारिक रिक द्वन्दो (यथा यश–अपयश, सर्दी–गर्मी आदि) पर विजय प्राप्ति के रूप में प्राप्त होता है।

आजकल योगासन के नाम पर स्पर्धायें आयोजित की जाती हैं जिनमें व्यक्ति की शारी(ति (स्वास्थ्य) आयु मनः स्थिति व खान–पान आदि पर बिना कोई घ्यान ढोल बजा–बजा कर लय बद्ध संगीत के साथ तथा कथित योगासनों का अभ्यास व प्रदर्शन किया जाता है जो कि एक शारीरिक व्यायाम तो हो सकता "योग" का "आसन" नहीं। योग का आसन व अन्य शारीरिक व्यायाम हिन्दी के ३६ के अंकों के समान है। इसका अर्थ व्यायाम की अनुपयोगिता सिद्ध करना कदापि नहीं है। व्यायाम का अपना महत्व है योग–आसन का अपना।

यही स्थिति प्राणायाम के साथ भी घटित हो रही है। जो कि वेद विरुद्ध है। दोनों नथुनों की चन्द श्वांस प्रश्वांस की प्रक्रियाओं को अपने अपने मतानुसार नाम देकर करना कराना भी उचित नहीं है। आजकल कुछ तथाकथित योगाचार्य/स्वामी आदि, हठयोग में वर्णित नाड़ी शोधन क्रियाओं तक को प्रणायाम बताकर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं।

"हठ योग" जिसे महर्षि दयानन्द ने वेद विरुद्ध बताया है, में नाड़ी शोधन हेतु नेति, धौति वास्त, त्राटक, नौलि व कपाल भाति नाम से छः प्रकार की शारीरिक क्रियाओं का वर्णन किया गया है। वहां नाड़ी शब्द से तात्पर्य शरीर में स्थित उन सभी स्थूल व सूक्ष्म नलिकाओं से है जिसमें कुछ भी प्रवाहितहो यथा–भोजन, रस, रक्त, वायु, संवेदनायें आदि। इन्हीं की साफ सफाई हेतु इन शोधन क्रियाओं (षट्कर्म) का किया जाना अपेक्षित है। अस्तु!

योग में वर्णित प्राणायाम के अभ्यास का उद्देश्य श्वांस प्रश्वास की गति को स्थिर कर फलतः चित्त (मन) की स्थिरता (एकाग्रता) द्वारा विवेक (ज्ञान) पर पड़े आवरण को क्षीण (हटा) कर विद्या धो प्राप्त करना है न कि श्वांस प्रश्वास की प्रक्रियाओं को प्रदर्शित कर लोगों की वाह–वाही या आलोचना प्राप्त कर अज्ञान (अविद्या) को।

जहां तक आपके द्वारा टी.वी. देखकर किये जा रहे तथाकथित योगाभ्यासों से शारीरिक हानि लाभ का प्रश्न है तो वह लाभ की अपेक्षा हानि का होना अधिक सम्भावित है। आप कोई भी औषधि का प्रयोग किसी शारीरिक क्रिया में विकृति (Pathology) होने पर ही तो करते हैं वह भी किसी शिक्षित व कुशल चिकित्सक की देख रेख में। इन तथाकथित योगाभ्यासों (आसन, प्रणायाम, क्रियाओं आदि) द्वारा भी हमारी शारीरिक रचना व क्रिया प्रभावित होती है। बिना किसी आवश्यकता (विकृति) के जैसे हम कोई औषधि आदि नहीं लेते हैं ठीक उसी प्रकार बिना किसी आवश्यकता के केवल लोगों के देखा–देखी इस प्रकार के अभ्यासों का करना कहां तक उचित है? यदि कुछ करना ही है तो किसी शरीर रचना व क्रिया के ज्ञान के साथ–साथ योगाभ्यास में कुशल चिकित्सक की देख रेख में ही ऐसे अभ्यासों का करना उचित है जो कि आपकी शारीरिक स्थिति, आयु, कार्य करने का ढंग व खानपान आदि का यथोचित आंकलन कर आपको निर्देशित कर सके कि कौन कौन से अभ्यास आपके स्वास्थ्य संरक्षण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

यदि आप किसी शारीरिक रचना, क्रिया आदि के दोष से पीड़ित हैं तो अपनी आयु व्यवसाय, आहार–विहार आदि का विवरण प्रेषित कर अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

–डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व-वरिष्ठ परामर्शदाता चिकित्सक
राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेदिक कालेज एवं चिकित्सालय
लखनऊ। मो. 09415158571

आर्य समाज राज नगर गाजियाबाद का २६वां वार्षिकोत्सव

2 से 8 दिसम्बर, 2013 तक आयोजित

आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद का २६वां वार्षिकोत्सव दिनांक २ से ८ दिसम्बर, १३ तक आर्य समाज के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया।

जिसमें नित्य प्रातः ७:३० से १०:३० बजे तक यजुर्वेद महायज्ञ भजन प्रवचन हुये। २ से ४ दिसम्बर तक अपराह्न ३ से ५ बजे तक आचार्य शिवदत्त पाण्डेय का वेदोपदेश व श्री पं. योगेश्वरदत्त आर्य के भजनोपदेश हुये। दिनांक ५ दिसम्बर को प्रातः १०:४५ से कक्षा ६ से १२वीं तक के छात्र छात्राओं की अन्तर्विद्यालय भाषण प्रतियोगिता हुई। अपराह्न ३ से ५:३० बजे तक समाज सुधार सम्मेलन। दिनांक ६ दिसम्बर प्रातः ११ बजे ओ३म् ध्वजारोहण स्वामी धर्मेश्वरानन्द मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. द्वारा अपराह्न ३ से ५:३० बजे तक वेद सम्मेलन दिनांक ७ दिसम्बर, को प्रातः ७:३० से ११ बजे तक आध्यात्मिक सम्मेलन अपराह्न २:३० से ५:३० बजे तक आर्य महिला सम्मेलन ८ दिसम्बर को यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातः ८ से ६:४५ तक फिर १० से १२ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ। अध्यक्षता–पं. श्रद्धानन्द शर्मा ने की। अपराह्न १:३० बजे से प्रीतिभोज हुआ।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सोती नांगल (बिजनौर) का वार्षिकउत्सव दिनाँक २६, ३०, ३१ अक्टूबर २०१३ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें पूज्य स्वामी ओमवेश जी महाराज (पूर्व राज्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार). श्री पं० वेद प्रकाश शास्त्री जी व्याकरणाचार्य के प्रवचन तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० योगेश दत्त आर्य, पं० जय प्रकाश शर्मा, श्रीमती सीतादेवी आर्या, पं० घासी राम आर्य तथा पं० देवी चन्द्र शर्मा के मधुर भजनोपदेश, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, मद्य–निषेध सम्मेलन तथा छुआ–छूत निवारण सम्मेलन के माध्यम से लगातार तीन दिन तक उत्सव चलता रहा। जिसमें बहुत बड़ी संख्या में नर–नारी उपस्थित रहे। सभी श्रोताओं पर वैदिक सिद्धान्तों का बहुत अच्छा प्रभाव रहा।

मैपाल सिंह आर्य, प्रधान
आर्य समाज सोती नांगल बिजनौर (उत्तर प्रदेश)

त्रिदिवसीय धर्म जागृति महोतसव सम्पन्न

अफजगढ़ (बिजनौर), आर्य समाज का त्रिदिवसीय धर्म जागृति महोत्सव १८ से २० अक्टूबर तक पं० विष्णुमित्र वेदार्थी, पं० मामचंद जी पथिक, विक्रमदेव आर्य, व संतोष वाला आर्या आदि विद्वानों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

महोत्सव का संचालन डा० अशोक रस्तोगी ने किया तथा अध्यक्षता चौ चरण सिंह आर्य, यतीश आर्य, जयवती देवी आदि ने की सुरेश पाल आर्य, अवधेश आर्य शुभम रिशव आदि का विशेष सहयोग रहा।

२० अक्टूबर को आर्योपप्रतिनिधि सभा जनपद बिजनौर का सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

आर्य समाज रानी मण्डी अतरसुइया का १०३वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रानीमण्डी अतरसुइया इलाहाबाद का १०३वाँ वार्षिकोत्सव एवं यजुवेद पारायण महायज्ञ दिनांक १६ से २४ नवम्बर २०१३ तक गोपीनाथ गिरिजानन्दिनी आदर्श कन्या इण्टर कालेज इलाहाबाद के सौजन्य से सुसम्पन्न हुआ।

जिसमें १६ से २४ नवम्बर तक नित्य प्रातः ६ बजे से आर्य समाज मन्दिर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनांक १६.११.१३ को शोभायात्रा गोपीनाथ गिरिजानन्दिनी आदर्श कन्या इण्टर कालेज से निकाली गयी जो नगर के विभिन्न अंचलों में घूमकर समाप्त हुयी।

दिनांक २२ से २४ नवम्बर तक सायं प्रवचन और भजन हुये। दिनांक २३ नवम्बर को दोपहर २ बजे से महिला सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें महिलाओं के मातृ शक्ति पद पर प्रतिष्ठित कराने के लिए वेदाधारित जीवन शैली अपनाने पर जोर दिया गया २४.११.१३ को ऋषि लंगर भी आयोजित किया गया।

डा० बी०पी० सागर, मंत्री।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में 'शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।